BA(Hons),Sub-Sociology
Part-1st, Paper-1st
Topic-Social Group, Characteristic

BA - I (Hons) Sociology

PAPER - I

TOPIC - SOCIAL GROUP (सामाजिक समूह)

Define group and discuss its Characteristic

समाजशास्त्र में समूह का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है और सभी समाजशास्त्रियों ने किसी न किसी रूप में इसका अध्ययन किया है। साधारणतया समूह का अर्थ एक जगह उपस्थिति एक ही प्रकार की अनेक चीजों से है। जैसे बगीचे में उपस्थित फूलों की क्यारी को समूह कहा जाता है। परन्तु समाजशास्त्रीय अर्थ में समूह का अर्थ प्रचलित अर्थ से भिन्न है।

परिभाषा (Definition): विभिन्न समाजशास्त्रीयों ने समूह को परिभाषित किया है कुछ मुख्य परिभाषाएँ निम्न प्रकार है —

मैकाइवर तथा पेज : के अनुसार "समूह से हमारा तात्पर्य व्यक्तियों की किसी ऐसे संग्रह से है जो एक दूसरे के साथ सामाजिक संबन्ध स्थापित करते हैं।"

ऑगबर्न तथा निमकॉफ के अनुसार, "जब कभी दो या दो से अधिक व्यक्ति एक साथ मिलते हैं और एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं।

विलियम के अनुसार, "एक सामाजिक समूह व्यक्तियों के उस निश्चित संग्रह को कहते हैं जो परस्पर संबंधित क्रियाएँ करते हैं और जो इस अन्तःक्रिया की इकाई की रूप में ही स्वयं दूसरे के द्वारा मान्य होते हैं"।

बोगार्डस के अनुसार, "सामाजिक समूह दो या अधिक व्यक्तियों की ऐसी संख्या को कहते हैं, जिनका ध्यान कुछ सामान्य उद्देश्यों पर हो और जो एक दूसरे को प्रेरणा दें, जिनमें शक्ति हो और जो सामान्य क्रियाओं में सम्मिलित हो"।

हॉट एवं रेस के अनुसार, "समूह अन्तः-क्रिया में संलग्न व्यक्तियों का एक संगठित संग्रह है"।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक समूह से हमारा तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों के ऐसे संग्रह से है जो पारस्परिक रूप से एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तथा किन्हीं सामान्य हितों के लिये एक दूसरे के साथ अर्थपूर्ण अन्तः क्रिया के द्वारा सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

समूह की विशेषताएँ (Characteristics of Groups) :

परिभाषाओं के आधार पर हम समूह की निम्नलिखित विशेषताओं की चर्चा कर सकते हैं —

(i) एक से अधिक व्यक्तियों का संकलन :— समूह में हमेशा एक से अधिक व्यक्तियों का संकलन होता है। कम से कम दो व्यक्तियों का होना आवश्यक है; जैसे पति पत्नी मिलकर परिवार समूह की रचना करते हैं। समूह में सदस्यों की अधिकतम संख्या कितनी हो, इसकी कोई सीमा नहीं होती।

(ii) सामान्य लक्ष्य :- समूह के सदस्यों के समक्ष एक सामान लक्ष्य होता है। बिना एक सामान्य लक्ष्य के समूह का निर्माण संभव नहीं है। लक्ष्य की प्रकृति भिन्न भिन्न हो सकती है; जैसे - प्राथमिक समूह के लक्ष्य दूरगामी हो सकते हैं, जबकि द्वितीयक समूह के लक्ष्य को जल्द हासिल करने का प्रयास किया जाता है।

(iii) सामान्य नियम :- प्रत्येक समूह के कुछ अपने लिखित या अलिखित नियम होते हैं, जो सभी सदस्यों पर लागू होते हैं। ये नियम इस बात पर भी बल देते हैं कि समूह के कार्यकलाप में भाग लेते हुए हम अपनी इच्छा से चाहे जो व्यवहार करने के लिये स्वतंत्र नहीं होते। अपराधियों के समूहों के भी कुछ अपने नियम होते हैं।

(iv) समूह व्यक्तियों की सामाजिक इकाई :- विभिन्न व्यक्तियों के संकलन से समूह एक सामाजिक इकाई के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होता है। समूह में रहते हुए व्यक्ति एक दूसरे से सम्बद्ध होता है। समूह की अपनी एक अलग पहचान भी इसी तरह विकसित होती है।

(v) अपेक्षाकृत अधिक स्थायित्व : प्रत्येक समूह में कुछ न कुछ स्थायित्व अवश्य होता है। यहाँ हमें इस बात पर ध्यान देना होगा की समाज में व्यक्तियों के अनेक संकलन होते हैं जैसे - भीड़ आदि, जिनमें सदस्यों के बीच सामाजिक सम्बन्ध नहीं होते। यही कारण है कि भीड़ में स्थायित्व नहीं पाया जाता। इसके विपरीत, सामाजिक समूह में अधिक स्थायित्व क्योंकि इसके सदस्यों में एक सामाजिक संबन्ध पाया जाता है।

(vi) सदस्यता ऐच्छिक होती है :- समाज में अनेक प्रकार के समूह होते हैं लेकिन हम सभी समूहों के सदस्य नहीं होते। हम उन्हीं समूहों में जाना चाहते हैं जहाँ के नियम, लक्ष्य आदि हमारे अनुकूल होते हैं। अपने हित को ध्यान

में रखते हुए अपनी स्वतंत्रता व इच्छा से हम किसी भी समूह में सदस्यता प्राप्त कर सकते हैं।

(VII) समूह की सत्ता – व्यक्ति की तुलना में समूह की शक्ति अधिक होती है। जिस कार्य को हम अकेले नहीं कर सकते उसे सामूहिक आधार पर कर सकते हैं। समूह की इस विशेषता की ओर दुर्खीम ने विशेष तौर पर ध्यान खींचा है। विभिन्न कार्यों के लिये जो हमारा सहयोग होता है उसी से समूह की सत्ता उत्पन्न होती है, जो व्यक्तिगत सत्ता को गौण बना देती है।

(VIII) समूह की एक संरचना – समूह के प्रत्येक सदस्य की एक स्थिति होती है। यह स्थिति ~~पद~~ या पद अन्य सदस्यों की स्थिति से जुड़ा होता है। स्थितियों के अनुरूप सदस्यों की भूमिकाएं भी होती हैं। विभिन्न सदस्यों की स्थितियों एवं भूमिकाएं आपस में सम्बद्ध होती हैं। अतः संबद्ध भूमिकाएं समूह को एक विशेष संरचना प्रदान करती हैं।

(IX) प्रत्येक सदस्य की व्यक्तिगत भूमिका – समूह के अन्तर्गत सदस्य की एक निश्चित भूमिका होती है। इसी भूमिका के अनुरूप सदस्य समूह के कार्यों में अपना योगदान करता है। किसी भी समूह का अस्तित्व तभी तक बना रहता है जबतक सभी सदस्य अपेक्षित भूमिकाओं का निर्वाह करते हैं।

(X) ~~स्थायित्व~~: सदस्यों में एक प्रकार का सामाजिक संबन्ध: - समूह की अवधारणात्मक व्याख्या करते हुए मैकाइवर एवं पेज ने सामाजिक संबन्ध पर अधिक बल दिया है। वस्तुतः इस प्रकार के सम्बन्ध के कारण सभी सदस्यों में एक प्रकार की पारस्परिकता पाई जाती है। इसके अन्तर्गत हम विचारों, क्रियाओं आदि का आदान प्रदान करते हैं।

समूह की विशेषता की चर्चा करते हुए मर्टन (Merton) ने कहा है कि किसी सामाजिक समूह में अन्य तत्वों के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि व्यक्ति स्वयं अपने को समूह का सदस्य समझे और उसके प्रति हम की भावना दर्शाए। इसके अतिरिक्त, यह भी आवश्यक है कि एक समूह के सभी सदस्य एवं दूसरे समूह के सभी सदस्य यह मानें ~~कि~~ कि अमुक व्यक्ति अमुक समूह का सदस्य है।

—X—